



SHRI MANOJ DAS (POSTHUMOUS)

Shri Manoj Das was an eminent bilingual author, writing in his mother tongue Odia and in English. He had been teaching English Literature and the works of Sri Aurobindo at the Sri Aurobindo International Centre of Education, a wing of the Sri Aurobindo Ashram, Puducherry. For several years he also wrote regular personal columns for major newspapers in English and Odia. Further, he distinguished himself as the editor of Diganta and The Heritage, two monthly magazines respectively in Odia and English. He used to be a visiting Professor to the National Institute of Advanced Studies, Bangalore and Author-Consultant to the Ministry of Education, the Republic of Singapore, for a project on moral and spiritual Education.

2. Born on 27th February, 1934 in a village on the sea in Odisha, Shri Das, who grew up amidst loving rural folks and Nature's splendours, also had the horrific experience of a devastating cyclone followed by famine and at the age of eight, stood witness to his affluent home being plundered by savage gangs of bandits not once but twice. While studying Law under Utkal University and M.A. at Ravenshaw College, Cuttack, he took leading part in a number of literary, social and political activities and in 1956, played a distinct role in the Afro-Asian Students Conference at Bandung, Indonesia.

3. Shri Das's creative sensibility had been deeply impacted by his childhood experiences, at once sweet and bitter, was always a seeker after the mystery of life, a quest that led him to the works of Sri Aurobindo. In 1963 he joined Sri Aurobindo Ashram along with his wife Pratijna Devi, a scion of the Raj family of Kujang.

4. Shri Das is recognised as a competent interpreter of India's cultural and spiritual heritage. He participated in several literary programmes in India and abroad such as, chosen to deliver the 1st UNESCO Lecture (1997) in Delhi, sponsored by the Ministry of Human Resource Development; 1st Sri Aurobindo Memorial Lecture by the NCERT at the Calcutta University; the Presidential Address at the inauguration of the mile-stone 20th World Book Fare, Delhi, led Indian delegation of writers to China etc.

5. Shri Das received several honours and awards including Padma Shri (2001); D. Litt. (Honoris Causa) from five universities; the Sahitya Akademi Award (1972) as well as the Akademi's highest honour, the Fellowship (2007); the Saraswati Samman (2000) by K.K. Birla Foundation; Odisha Sahitya Akademi Award (twice — a rare event) as well as its highest honour Atibadi Jagannath Das Samman; the 1st Sri Aurobindo Puraskar (1997) by Sri Aurobindo Samiti (Kolkata) supported by the Government of West Bengal for his research in the Archives of Britain on the early phase of the Freedom Movement led by Sri Aurobindo; Utkal Sahitya Samaj's highest honour, Fellowship as well as the title Utkal Ratna; BAPASI (Book-sellers and Publishers Association of South India) Award (1998) as the Best writer of the year in English in the South; Amrita Keerti National Award; Lala Diwan Chand Trust Samman Puraskar; Kavi Samrat Upendra Bhanja National Award by Berhampur University; 1st National Nilimarani Smruti Samman by KIIT (Deemed University) and Kadambini publications; Life-time Literary Achievement Award by NALCO; Bagdevi Literary Award and the 1st Kalinga Mystic Literary Award.

6. Shri Das passed away on 27th April, 2021.





श्री मनोज दास (मरणोपरांत)

श्री मनोज दास एक प्रतिष्ठित द्विभाषी लेखक थे, और अपनी मातृभाषा ओडिया व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में साहित्य रचना करते थे। वह श्री अरबिंदो आश्रम, पुदुच्चेरी की एक शाखा, श्री अरबिंदो इंटरनेशनल सेंटर ऑफ एजुकेशन में अंग्रेजी साहित्य और श्री अरबिंदो के साहित्य का अध्यापन कर रहे थे। कई वर्षों तक उन्होंने अंग्रेजी और ओडिया के प्रमुख समाचार पत्रों के लिए नियमित रूप से कॉलम भी लिखे। इसके अलावा, उन्हें ओडिया और अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाएँ क्रमशः दिगंत और द हेरिटेज के कुशल संपादक के रूप में जाना जाता था। वह नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज, बैंगलोर के विजिटिंग प्रोफेसर रहे और उन्होंने सिंगापुर गणराज्य के शिक्षा विभाग के नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा की एक परियोजना के लेखक–सलाहकार के रूप में भी कार्य किया।

2. 27 फरवरी, 1934 को ओडिशा के समुद्री तट के पास एक गाँव में जन्मे, श्री दास का लालन–पालन ग्रामीण अंचल और प्राकृतिक सौंदर्य के बीच हुआ परंतु उन्हें भीषण चक्रवात और उसके बाद अकाल जैसी आपदाओं का भी सामना करना पड़ा और आठ वर्ष की आयु में उन्होने एक बार नहीं बल्कि दो–दो बार डाकुओं के बर्बर गिरोह द्वारा अपने संपन्न घर को लुटते हुए देखा। उत्कल विश्वविद्यालय से कानून की शिक्षा और कटक के रेवेंशॉ कॉलेज में एम.ए. की शिक्षा के दौरान, उन्होंने कई साहित्यिक, सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया और वर्ष 1956 में, बांडुंग, इंडोनेशिया में आयोजित एफ्रो–एशियाई छात्र सम्मेलन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

3. श्री दास की रचनात्मक संवेदना उनके बचपन के अनुभवों, जो कभी मधुर थी तो कभी कटु, से अत्यंत प्रभावित हुई। वे जीवन के रहस्य को जानने के लिए सदैव उत्सुक रहते थे और इसी खोज ने उन्हें श्री अरबिंदो के कार्यों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। वर्ष 1963 में वह कुजंग राज परिवार की वंशज अपनी पत्नी प्रतिजना देवी के साथ श्री अरबिंदो आश्रम से जुड़ गए।

4. श्री दास को भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का एक सुयोग्य व्याख्याकार माना जाता है। उन्होंने भारत और विदेश में कई साहित्यिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया जिनमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रायोजित दिल्ली में प्रथम यूनेस्को व्याख्यान (1997) देने के लिए चुना जाना; कोलकाता विश्वविद्यालय में एनसीईआरटी द्वारा प्रथम श्री अरबिंदो स्मृति व्याख्यान देना; प्रतिष्ठित 20वें विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली के उदघाटन समारोह में अध्यक्षीय सम्बोधन, चीन जाने के लिए भारतीय लेखकों का प्रतिनिधित्व करना आदि प्रमुख हैं ।

5. श्री दास को पद्मश्री (2001), पाँच विश्वविद्यालयों से डी. लिट. (मानद उपाधि); साहित्य अकादमी पुरस्कार (1972) के साथ–साथ अकादमी का सर्वोच्च सम्मान– फेलोशिप (2007); के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा सरस्वती सम्मान (2000); ओडिशा साहित्य अकादमी पुरस्कार (दो बार एक विशिष्ट उपलब्धि) के साथ–साथ इसका सर्वोच्च सम्मान–अतिबादी जगन्नाथ दास सम्मान; श्री अरबिंदो के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रारम्भिक चरण विषय पर ब्रिटेन के अभिलेखागार में शोध के लिए पश्चिम बंगाल सरकार के सहयोग से श्री अरबिंदो समिति (कोलकाता) द्वारा श्री अरबिंद पुरस्कार; उत्कल साहित्य समाज का सर्वोच्च सम्मान, फैलोशिप के साथ–साथ उत्कल रत्न; दक्षिण भारत में अंग्रेजी के वर्ष के सर्वश्रेष्ठ लेखक के रूप में बीएपीएएसआई (बुकसेलर्स एंड पब्लिशर्स एसोसिएशन ऑफ साउथ इंडिया) पुरस्कार (1998); अमृत कीर्ति राष्ट्रीय पुरस्कार; लाला दीवान चंद ट्रस्ट सम्मान पुरस्कार; बेरहामपुर विश्वविद्यालय द्वारा कवि सम्राट उपेंद्र भांजा राष्ट्रीय पुरस्कार; केआईआईटी (डीम्ड यूनिवर्सिटी) और कादंबिनी प्रकाशन द्वारा प्रथम राष्ट्रीय नीलिमारानी स्मृति सम्मान; नाल्को द्वारा लाइफ–टाइम लिटरेरी अचीवमेंट अवार्ड; बाग्देवी साहित्यिक पुरस्कार और प्रथम कलिंग मिस्टिक लिटरेरी अवार्ड, सहित कई सम्मान और पुरस्कार प्रदान किए गए।

6. श्री दास का 27 अप्रैल, 2021 को देहावसान हो गया।